डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 14-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद में काव्य सौन्दर्य

ज्ञान का आदि स्रोत 'ऋग्वेद' भारतीय काव्यधारा का भी आदिस्रोत है। भारत की प्राचीनतम काव्यकृति होने के साथ ही यह विश्व साहित्य की भी प्राचीनतम साहित्यिक रचना है

ऋग्वेद का ऋषि मंत्रद्रष्टा तो है ही, साथ ही वह संवेदनशील कवि भी है। ऋषि के रूप में वह प्रकृति में छिपी दिव्य शक्तियों का साक्षात्कार करता है, तो कवि के रूप में वह अपनी कोमल अनुभूतियों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी करता है। परिणामस्वरूप, ऋग्वेद में स्तुतिपरक एवं याज्ञिक कर्मकांड के लिए उपयोगी बहुसंख्यक सूक्तों के साथ ही, अनेक ऐसे सूक्त भी उपलब्ध होते हैं, जिनमें वैदिक कवि की उर्वर कल्पना के दर्शन स्थल-स्थल पर होते हैं। इस संबंध में पंडित राहुल सांकृत्यायन की उक्ति ध्यान देने योग्य है-

"ऋग्वेद में जहाँ-तहाँ सुंदर काव्य की जो छटा मिलती है, उससे पता लगता है कि ऋग्वैदिक आर्य कविता के प्रेमी थे।" (ऋग्वैदिक आर्य, पृष्ठ 245 -246)

ऋग्वेद में काव्यात्मक सौंदर्य की सर्वप्रथम अनुभूति वहाँ होती है, जहाँ वैदिक कवि ने प्राकृतिक दृश्यों में ईश्वरीय शक्ति का मानवीकरण किया है । यह मानवीकरण ऋग्वेद की कविता की प्रमुख विशेषता है। इसी कारण, प्राकृतिक उषा, एक सुन्दरी के रूप में हमारे सामने आती है । इसी प्रकार, इंद्र को भी हम एक वीर उत्साही योद्धा के रूप में और वरुण को एक सर्वाधिकार-संपन्न राजा के रूप में देखते हैं । संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ऋग्वेद में प्राकृतिक और भौतिक शक्तियों का, देवतारुप में हुआ यह मानवीकरण, सर्वत्र ही काव्य-सौन्दर्य से ओतप्रोत है।

ऋग्वेद में रसात्मक-तत्व

ऋग्वेद में, हमें स्थान-स्थान पर रसात्मकता की अनुभूति होती है । रसों में से, श्रृंगार रस के दोनों ही भेद- संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार इसमें मिल जाते हैं ।

संयोग श्रृंगार की झलक के रूप में उष:सूक्त (1/123) को प्राय: उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

कन्येव तन्वा शाशदाना एषि देवि देवमियक्षमाणम्।

संस्मयमाना युवति: पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे निभाती।।"ऋ०1।123।10।।

रसिक वैदिक कवि ने यहां प्राकृतिक उषा का मानवीकरण सुंदरी कन्या के रूप में किया है । कवि के अनुसार-

'उषा, कमनीय कन्या के समान अत्यधिक आकर्षणमयी होकर सूर्य के सम्मुख जाती है और स्मितवदना, वह उषा युवती के समान, अपने वक्ष को सूर्य के सम्मुख निर्वस्त्र कर देती है।

संयोग श्रृंगार के आभास के लिए यम-यमी सूक्त विशेषत: द्रष्टव्य है । इस सूक्त में यमी (नायिका के रूप में) बार-बार यम (नायक) से प्रणय-निवेदन करती है ।

वियोग श्रृंगार का उदाहरण पुरुरवा-उर्वशी सूक्त है। यहाँ उर्वशी के वियोग से पीड़ित पुरूरवा की उक्तियाँ बहुत ही मार्मिक, काव्यात्मक और सुंदर है । वीररस के उदाहरण के रूप में, ऋग्वेद में किए गए इंद्र के ओजस्वितापूर्ण वर्णन को देखा जा सकता है । यहाँ ऋषि गृत्समद ने इंद्र के पराक्रम का वर्णन इस प्रकार किया है-

"यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनास:यं युद्धमाना अवसे हवन्ते ।

यों विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत स जनास इन्द्र:।।"ऋ०1।12।9।।

यहाँ कहा गया है कि इंद्र की बराबरी करने वाला दूसरा कोई भी योद्धा नहीं है।

सौंदर्य वर्णन

काव्य में सौंदर्य-वर्णन का विशेष महत्व होता है । और इस विषय में सभी विद्वान एकमत है कि सौंदर्य-वर्णन की दृष्टि से ऋग्वेद के उष: सूक्त की कोई तुलना नहीं है । पूर्व दिशा में, क्षितिज पर अपनी अरुण आभा प्रकट करती हुई उषा को देखकर ऋग्वेद का कवि उसके सौंदर्य में जैसे खो जाता है।

उषो देव्यमर्ता विभाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती।

आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये।।"ऋ०6।61।2।।

यहाँ सोने के रथ पर चढ़कर आती हुई उषा का सुंदर चित्रण हुआ है। एक अन्य स्थल पर भी उषा के रूप-सौंदर्य का अच्छा चित्रण हुआ है-

"जायेव पत्या उशती सुवासा ।

उषा हस्रवे निरिणीते अप्स:।।"ऋ०1।124।7।।

यहां उषा की तुलना शोभन वस्त्रों वाली सुंदरी युवती से की गई है।

अलंकार

ऋग्वेद में प्रयुक्त अलंकारों के विषय में, श्री बलदेव उपाध्याय का विचार है कि "रूपक वेद का एक प्रशंसनीय बहुल -प्रयुक्त अलंकार है । वेद की शैली ही रूपकमयी है । सुंदर उपमाओं का एक रमणीय संतान ऋग्वेद के मंत्रों में उल्लसित होता है । अन्य अलंकारों में अतिशयोक्ति, व्यतिरेक, समासोक्ति आदि अनेक अलंकारों के भी दर्शन हमें यहां मिलते हैं ।"(वैदिक साहित्य पृष्ठ 337)

ऋग्वेद में अलंकारों की दृष्टि से यहां सर्वप्रथम, उपमा अलंकार पर विचार करना उपयुक्त होता है।

उपमा अलंकार

उपमा अलंकार, ऋग्वैदिक ऋषि का बहुत ही प्रिय अलंकार है। यह ऋग्वेद के प्रमुख अलंकारों में से एक है। 'इव' के ही अर्थ में ऋग्वेद में 'न' का प्रयोग भी उपमा वाचक शब्द के रूप में मिलता है। 'इव' शब्द के साथ उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है-

"अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये धनानाम्।

जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रवे नरिणीते अप्सः।।"ऋ०1।124।7।।

यहां कवि ने, उषा के वर्णन में 'अभ्रातेव', 'गर्तारगिव', 'जायेव' तथा 'हस्रवे' आदि के द्वारा उपमा की झड़ी सी लगा दी है ।

इसी प्रकार, ऋग्वेद 2/36/1-8 में भी उपमा का प्रायः प्रत्येक पंक्ति में एक से अधिक बार प्रयोग हुआ है । नदी सूक्त में भी उपमा का प्रयोग हुआ है । इसमें कवि ने व्यास और सतलुज नदी का वर्णन करते हुए उनकी उपमा अश्व, गौ, रथी, वत्स, योषा और मर्य(पति) के साथ की है।

ऋग्वेद के 1/32/2 में वर्णित है कि जब इन्द्र ने, पर्वतों में रहने वाले वृत्र पर अपने वज्र का प्रहार किया, तब कोलाहल करता हुआ और वेगपूर्वक बहता हुआ जल उसी प्रकार समुद्र की ओर बढ़ चला, जिस प्रकार सायंकाल के समय घर को लौटने वाली, बछड़ों वाली गाय रंभाती और दौड़ती हुई अपने आश्रय स्थान की ओर जाती है।

वाश्रा इव धेनव :स्यन्दमाना।

अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः।।ऋ०1।32।2।।

इस प्रकार ऋग्वेद में उपमा अलंकार का सुंदर वर्णन देखने को मिलता है।

अतिशयोक्ति अलंकार असहयोग के भी अनेक सुंदर उदाहरण मिलते हैं जैसे-

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्व स्यनश्नन्न्न्यो अभिचाकशीति ॥

यहाँ आत्मा और परमात्मा उपमेय है, पक्षीद्वय उपमान है । उपमान के द्वारा उपमेय का निगरण किए जाने से यहां अतिशयोक्ति अलंकार हुआ है

"चत्वारि श्रृंगा त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या आ विवेश।।" ऋ०4।58।3।।

अतिशयोक्ति का सुंदर उदाहरण होने के साथ ही यहाँ वैदिक कवि की काव्यकुशलता भी उत्कृष्ट कोटि की है । यहाँ प्रयुक्त पदों की यह विशेषता है कि इस एक ही ऋचा का अर्थ विभिन्न विद्वान विभिन्न प्रकार से करते हैं । सायण ने इस ऋचा की व्याख्या यज्ञपरक की है । पतंजलि ने इसकी व्याख्या शब्दपरक की है और राजशेखर ने इसकी व्याख्या काव्यपरक की है ।

इस प्रकार ऋग्वेद में स्थान-स्थान पर काव्य का सौन्दर्य प्रस्फुटित हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

ऋग्वेद के आख्यान सूक्तों में भी काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं । यम-यमी, और पुरुरवा-उर्वशी सूक्त की काव्यात्मकता उत्कृष्ट है । यहां विशेष रुप से, सूर्या सूक्त का उल्लेख देखने योग्य है। इस सूक्त में सूर्या और सोम के विवाह का काव्यात्मक वर्णन हुआ है । सरलता, सरसता और भावप्रवणता इसकी विशेषताएं है।